RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. / 261 / भोपाल / 2009-11

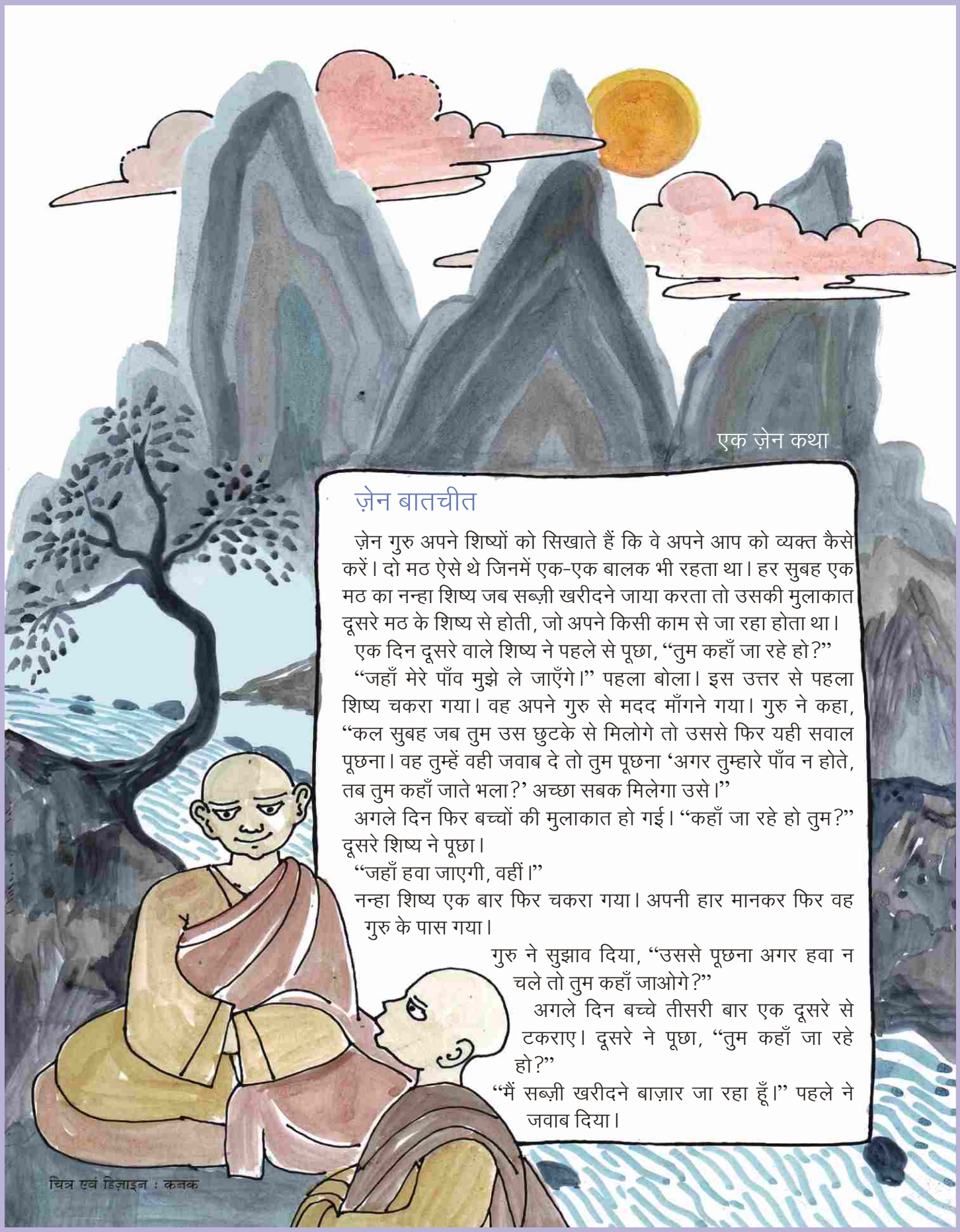

एक ज़ेन कथा

## ज़ेन बातचीत

ज़ेन गुरु अपने शिष्यों को सिखाते हैं कि वे अपने आप को व्यक्त कैसे करें। दो मठ ऐसे थे जिनमें एक-एक बालक भी रहता था। हर सुबह एक मठ का नन्हा शिष्य जब सब्ज़ी खरीदने जाया करता तो उसकी मुलाकात दूसरे मठ के शिष्य से होती, जो अपने किसी काम से जा रहा होता था।

एक दिन दूसरे वाले शिष्य ने पहले से पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"जहाँ मेरे पाँव मुझे ले जाएँगे।" पहला बोला। इस उत्तर से पहला शिष्य चकरा गया। वह अपने गुरु से मदद माँगने गया। गुरु ने कहा, "कल सुबह जब तुम उस छुटके से मिलोगे तो उससे फिर यही सवाल पूछना। वह तुम्हें वही जवाब दे तो तुम पूछना 'अगर तुम्हारे पाँव न होते, तब तुम कहाँ जाते भला?' अच्छा सबक मिलेगा उसे।"

अगले दिन फिर बच्चों की मुलाकात हो गई। "कहाँ जा रहे हो तुम?" दूसरे शिष्य ने पूछा।

"जहाँ हवा जाएगी, वहीं।"

नन्हा शिष्य एक बार फिर चकरा गया। अपनी हार मानकर फिर वह गुरु के पास गया।

गुरु ने सुझाव दिया, "उससे पूछना अगर हवा न चले तो तुम कहाँ जाओगे?"

अगले दिन बच्चे तीसरी बार एक दूसरे से टकराए। दूसरे ने पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैं सब्ज़ी खरीदने बाज़ार जा रहा हूँ।" पहले ने जवाब दिया।

चित्र एवं डिज़ाइन : कनक

प्रकाशक एवं मुद्रक सी. एन. सुब्रह्मण्यम द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोनः 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादकः सुशील शुक्ल